

माध्यमिक स्तर पर ग्रामीण तथा शहरी शिक्षकों की शिक्षण दक्षता तथा शिक्षक प्रभावशीलता में सम्बन्ध का एक अध्ययन

गगन चन्द्र गौतम¹, डॉ. योगेश कुमार²

DOI: <http://doi.org/10.5281/zenodo.23286320>

Review: 31/06/2026

Acceptance: 09/07/2026

Publication: 31/07/2026

सारांश : प्रस्तुत अध्ययन के अंतर्गत शोधार्थी द्वारा माध्यमिक स्तर पर ग्रामीण तथा शहरी शिक्षकों की शिक्षण दक्षता तथा शिक्षक प्रभावशीलता में सम्बन्ध का एक अध्ययन करने का प्रयास किया गया है। शोध के अंतर्गत शोधार्थी ने यादृच्छिक प्रतिदर्श विधि का प्रयोग करते हुए आंकड़ों को जौनपुर जिले में माध्यमिक स्तर पर कार्यरत प्राध्यापकों से किया है। निष्कर्ष के रूप में यह प्राप्त हुआ है कि माध्यमिक स्तर पर कार्यरत ग्रामीण शिक्षकों की शिक्षण दक्षता तथा शिक्षक प्रभावशीलता के मध्य सार्थक रूप से धनात्मक से संबंध पाया जा रहा है। यह निष्कर्ष ग्रामीण शिक्षकों की शिक्षण दक्षता तथा शिक्षक प्रभावशीलता के धनात्मक संबंध को प्रदर्शित करता है। इसी प्रकार अन्य परिणाम के रूप में माध्यमिक स्तर पर कार्यरत शहरी शिक्षकों की शिक्षण दक्षता तथा शिक्षक प्रभावशीलता के मध्य सार्थक रूप से धनात्मक से संबंध पाया गया है। यह निष्कर्ष दर्शाता है कि शहरी शिक्षकों में भी शिक्षण दक्षता तथा शिक्षक प्रभावशीलता के मध्य सकारात्मक सहसंबंध पाया जा रहा है।

मुख्य शब्द: शिक्षण दक्षता, शिक्षक प्रभावशीलता, ग्रामीण शिक्षक, शहरी शिक्षक, माध्यमिक स्तर, सहसंबंधात्मक अध्ययन, जौनपुर जनपद।

“किसी भी राष्ट्र का विकास शिक्षकों के सशक्त कंधों और कुशल हाथों पर निर्भर करता है।”

प्रस्तावना: — जिस देश की जैसी शिक्षा व्यवस्था होती है, वैसे ही उसके नागरिकों का निर्माण होता है। देश के नागरिकों के सामाजिक कृत्यों और क्रियाकलापों से उस देश की सभ्यता और संस्कृति का ज्ञान प्राप्त होता है, क्योंकि शिक्षण संस्थाएँ ही समाज की नवीन पीढ़ी को संस्कारित करने का कार्य करती हैं। इस प्रकार, शिक्षण संस्थाएँ समाज को निरंतर प्रभावित करती रहती हैं। शिक्षक को राष्ट्र निर्माता की संज्ञा दी जाती है, क्योंकि वे देश के नागरिकों की गुणवत्ता को बढ़ाने का कार्य करते हैं। वे समाज की संस्कृति को समयानुसार परिष्कृत एवं परिमार्जित करके नवीन पीढ़ी को हस्तांतरित करते हैं। शिक्षक सूर्य के समान हैं, जो सम्पूर्ण राष्ट्र को वैचारिक दृष्टिकोण से प्रकाशमान बनाता है, और सम्पूर्ण शिक्षा प्रणाली इसके चारों ओर पृथ्वी की भाँति घूमती रहती है। शिक्षण व्यवसाय को आदर्श व्यवसाय माना जाता है। प्राचीन काल में शिक्षक इसे अपने जीवन का परम कर्तव्य समझते थे और उन्हें सामाजिक आदर्शों, मूल्यों एवं मान्यताओं का जनक एवं पालक माना जाता था।

शिक्षण दक्षता:— प्रस्तुत अध्ययन में शिक्षण दक्षता से अभिप्राय माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत महिला तथा पुरुष शिक्षकों में पाई जाने वाली शैक्षिक योग्यता से है जो उन्हें कुशल शिक्षक बनने में सहायता प्रदान करती है तथा जिनके माध्यम से वे अपने विद्यार्थियों के मध्य तालमेल तथा आपसी समझ विकसित कर पाते हैं। शिक्षण दक्षता, शिक्षक का वह प्रत्यक्ष व्यवहार है जिसके द्वारा शिक्षण सम्बन्धी अधिगम प्रक्रिया को सुचारु रूप से सम्पन्न कराने हेतु क्रिया-कलापों को प्रभावशाली ढंग से विद्यार्थियों के समक्ष प्रस्तुत किया जाता है।

शिक्षक की भूमिका:— शिक्षक शैक्षणिक कार्यक्रमों के कार्यान्वयन और शिक्षा के आयोजन के लिए एक मुख्य साधन हैं। इसलिए विद्यालय की समस्त गतिविधियों में शिक्षक का स्थान बहुत ही महत्वपूर्ण माना जाता है। यद्यपि शिक्षार्थी पाठ्यक्रम तथा विद्यालय का वातावरण भी शिक्षा के अंग माने जाते हैं। परन्तु शिक्षक की अपेक्षा इनकी महत्ता गौड़ मानी जाती है। अध्यापक

¹ शोधार्थी, शिक्षक शिक्षा विभाग, राजा हरपाल सिंह महाविद्यालय, सिंगरामऊ, जौनपुर, उत्तर प्रदेश, भारत।

² असिस्टेंट प्रोफेसर, शिक्षक शिक्षा विभाग, राजा हरपाल सिंह महाविद्यालय, सिंगरामऊ, जौनपुर, उत्तर प्रदेश, भारत।

गौरवशाली पद का स्वामी होता है। शिक्षण एक उदात्त व्यवसाय है और मानव इतिहास की महानतम तथा श्रेष्ठतम विभूतियों ने इस व्यवसाय को अपनाया है। मानव धार्मिक विचार, तथा समाज सुधारक बुद्ध, कन्फ्यूशियस, सुकरात, मुहम्मद साहब, महात्मा गाँधी आदि सच्चे अर्थ में मानव जाति के शिक्षक थे। इसीलिए प्राचीनकाल में गुरु (शिक्षक) को ऊँचा व प्रमुख स्थान देते हुए ईश्वर की श्रेणी में स्थापित किया गया था, परन्तु आज ऊँचे आदर्शों एवं भौतिकता की छाया में हम अध्यापक को गौड़ स्थान देने लगे हैं। यह एक नितान्त सत्य है कि सम्पूर्ण शिक्षा का संचालनकर्ता, उनका वास्तविक निर्देशक, संयोजक एवं रचनाकार तथा उसे नैतिकता का स्वरूप देने वाला शिक्षक ही है। शिक्षक के बौद्धिक परम्पराओं व तकनीकी क्षमताओं को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक हस्तान्तरित करता है और सभ्यता की ज्योति को सदैव प्रज्वलित रखता है। शिक्षक राष्ट्र के भावी कर्णधारों के कर्णधार हैं। क्योंकि शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य बालकों के व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास की पूर्ति, पूर्णरूपेण शिक्षकों पर ही अवलम्बित होती है। इसलिए कहा गया है कि "शिक्षा प्रणाली की कुशलता शिक्षकों पर निर्भर करती है।" राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 में शिक्षक के महत्व को स्वीकार करते हुए यह कहा गया है कि किसी समाज में शिक्षकों से उसकी सामाजिक सांस्कृतिक स्थिति का पता चलता है कोई भी राष्ट्र अपने शिक्षकों के स्तर से ऊपर नहीं उठ सकता है।

शिक्षक प्रभावशीलता:— प्रस्तावित अध्ययन में शिक्षक प्रभावशीलता का अर्थ शिक्षक के उस कौशल प्रबन्धन से है जो कक्षा के दौरान विभिन्न शिक्षण सहायक सामग्रियों के द्वारा प्रभावी रूप से पाठ को प्रस्तुत करने से होगा।

शैक्षिक कार्य :— जब तक शोधकर्ता एक विकासशील समाज या देश में शिक्षक के कार्य या उत्तरदायित्व का विश्लेषण करने का प्रयास करता है तो वह केवल यह हक कर ही सन्तुष्ट नहीं हो सकता कि उसका कार्य पाठ्यक्रम के अनुसार पढ़ाना—लिखाना मात्र ही है अथवा वह किसी अपने नियोजकों की शिक्षाओं को पूरा कर रहा है। शैक्षिक कार्य के विश्लेषण में शोधकर्ता को सर्वप्रथम उस सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक व सांस्कृतिक पृष्ठभूमि या सन्दर्भ को विश्लेषित करना होता है। जिसमें एक शिक्षक कार्य कर रहा है। उसके पश्चात् यह जानना होता है कि विद्यालयी संरचना में शिक्षक की क्या पद स्थिति है। उसके बाद उसके कार्य का विश्लेषण आता है। ऐसा करने से सन्दर्भ समूहों, परम्पराओं, युग की मांगों, शिक्षक की पृष्ठभूमि मूल्य तैयारी, व्यवसायीकरण, प्रशासन, शिक्षा संस्थाओं के सामाजिक वातावरण, शिक्षक विशेष के स्वचरित्र व जीवन योजना, शिक्षक कल्याण की अवस्थाएँ आदि विविध कारकों के प्रभाव को समझने का प्रयास करना होता है। ऐसा करने से कुछ विद्यालयी संप्रत्ययों का विशेष महत्व है। क्योंकि उनकी सहायता से यह विश्लेषण उपयुक्त ढंग से किया जा सकता है। ये प्रमुख सम्प्रत्यय कार्य, कार्यकर्ता कार्य क्षेत्र, कार्य व्यवहार, कार्य विशेषता या गुण, धंधा व्यवसायीकरण सर्जनात्मकता, स्वतंत्रता या स्वाधीनता और पृथक्करण है।

समस्या कथन:—

"माध्यमिक स्तर पर ग्रामीण तथा शहरी शिक्षकों की शिक्षण दक्षता तथा शिक्षक प्रभावशीलता में सम्बन्ध का एक अध्ययन"

अध्ययन के उद्देश्य:— प्रस्तुत अध्ययन में निम्नलिखित उद्देश्य निर्धारित किये गये थे।

1. माध्यमिक स्तर पर कार्यरत ग्रामीण शिक्षकों की शिक्षण दक्षता तथा शिक्षक प्रभावशीलता में सम्बन्ध का अध्ययन करना।
2. माध्यमिक स्तर पर कार्यरत शहरी शिक्षकों की शिक्षण दक्षता तथा शिक्षक प्रभावशीलता में सम्बन्ध का अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पनाएँ:— प्रस्तुत अध्ययन के उद्देश्यों के लिये निम्नलिखित शून्य परिकल्पनाओं का परीक्षण किया गया था।

1. माध्यमिक स्तर पर कार्यरत ग्रामीण शिक्षकों की शिक्षण दक्षता तथा शिक्षक प्रभावशीलता में सार्थक अन्तर नहीं है।
2. माध्यमिक स्तर पर कार्यरत शहरी शिक्षकों की शिक्षण दक्षता तथा शिक्षक प्रभावशीलता में सार्थक अन्तर नहीं है।

अध्ययन का परिसीमन:— प्रस्तुत शोध अध्ययन शोधार्थी ने समय, श्रम, एवं धन को ध्यान में रखते हुए केवल जौनपुर जनपद के माध्यमिक स्तर तक सीमित है। अध्ययन का न्यादर्श जौनपुर जनपद के अनुदानित शिक्षक से चयन किया गया था। जो लिंग, क्षेत्र व विषय के आधार पर आधे-आधे होंगे। माध्यमिक विद्यालय यू०पी० बोर्ड प्रयागराज से सम्बद्ध है। आँकड़ों का संकलन स्वनिर्मित उपकरणों के माध्यम से किया गया है।

अध्ययन विधि:— प्रस्तुत अनुसंधान के उद्देश्यों की पूर्ति हेतु वर्णनात्मक शोध विधि के अन्तर्गत सर्वेक्षण अनुसंधान विधि का प्रयोग किया गया है।

अध्ययन की जनसंख्या (समग्र):— प्रस्तुत शोध अध्ययन में जनसंख्या से तात्पर्य माध्यमिक स्तर पर कार्यरत शिक्षकों से है चूंकि प्रस्तुत अध्यापक हेतु शोधकर्ता द्वारा जौनपुर जनपद को परिसीमित किया गया है, अस्तु यह कहा जा सकता है कि प्रस्तुत अध्यापक की जनसंख्या के अंतर्गत जौनपुर जनपद में अवस्थित सभी माध्यमिक विद्यालयों को सम्मिलित किया गया है।

अध्ययन के न्यादर्श:— शोधकर्ता ने प्रस्तुत शोध में न्यादर्श के चयन में एक अच्छे न्यादर्श के सभी गुणों एवं विशेषताओं को समाहित करने के लिए अपेक्षित सावधानीपूर्वक न्यादर्श का चयन किया है। प्रस्तुत शोध अध्ययन में पोलपुर जनपद के शहरी तथा ग्रामीण न्यादर्श का चयन व्यावहारिक रूप से जौनपुर जनपद के शहरी तथा ग्रामीण क्षेत्रों में स्थित माध्यमिक विद्यालयों के कार्यरत शिक्षकों तथा शिक्षिकाओं में से किया गया है।

प्रयुक्त न्यादर्श चयन विधि:— प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोधकर्ता ने न्यादर्श के चयन हेतु सम्भाव्यता पर आधारित यादृच्छिक न्यादर्श तकनीकी का प्रयोग किया है।

न्यादर्श का आकार:— शोधकर्ता ने शोध की जनसंख्या में से स्तरीकृत त्यादृच्छिक न्यादर्श विधि की सहायता से प्रथम चरण में जौनपुर जनपद की तहसीलों में से किन्ही दो तहसीलों का चुनाव किया जिसमें जौनपुर सदर तथा कैराकत का चुनाव जिसमें से 2 तथा ग्राम क्षेत्रों के 20/20 विद्यालय चुने गए तक प्रत्येक विद्यालय के सभी शिक्षकों ने प्रस्तुत अनुसंधान में सम्मिलित किया गया जिसका तालिकावार वर्णन इस प्रकार है

सारणी 1

समूह	न्यादर्श		
	शहरी क्षेत्र के विद्यालय	ग्रामीण क्षेत्र के विद्यालय	कुल
महिला शिक्षक/पुरुष शिक्षक			
महिला अध्यापक	307	317	624
पुरुष अध्यापक	307	240	547
योग	614	557	1171

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि— जौनपुर के शहरी क्षेत्रों में स्थित माध्यमिक विद्यालयों में अध्यापनरत कुल —614 शिक्षको, जिसमें 307 पुरुष शिक्षक और 307 महिला शिक्षक तथा ग्रामीण क्षेत्रों में स्थिति माध्यमिक विद्यालयों में अध्यापनरत कुल —557 शिक्षको, जिसमें 240 पुरुष और 317 महिला शिक्षको को चुना गया है।

आँकड़ों के संग्रह के उपकरणः— शोध उपकरणों का प्रयोग आँकड़ों के संग्रह के लिए किया जाता है। प्रस्तुत शोध प्रबन्ध के उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए निम्नलिखित शोध उपकरणों का प्रयोग किया गया है प्रस्तुत शोध में दोनों चरों के संबंधों की जानकारी प्राप्त करनी है। अतः दो प्रकार के शोध उपकरणों का प्रयोग किया गया है जिनका विवरण इस प्रकार है:

- शिक्षक दक्षता मापनी
- शिक्षक प्रभावशीलता मापनी

सांख्यिकीय तकनीक— अध्याय प्रथम में वर्णित उद्देश्यों तथा परिकल्पनावादी के विश्लेषण हेतु शोधकर्ता द्वारा निम्न सांख्यिकीय तकनीक का प्रयोग किया गया।

पियर्सन का गुणांक सहसंबंधः— कार्ल पियर्सन का सहसंबंध गुणांक एक व्यापक रूप से प्रयुक्त गणितीय विधि है जिसमें रैखिक रूप से संबंधित चरों के बीच संबंध के स्तर को मापने के लिए संख्यात्मक निरूपण का प्रयोग किया जाता है। सहसंबंध गुणांक को ρ द्वारा व्यक्त किया जाता है।

आकड़ों का विश्लेषण तथा व्याख्याः— प्रस्तुत अध्ययन हेतु शोधकर्ता द्वारा शोध के उद्देश्यों तथा परिकल्पनाओं को आधार मानते हुए आकड़ों को उपरोक्त वर्णित शोध उपकरणों की सहायता से एकत्र किया तथा कार्ल पियर्सन द्वारा प्रतिपादित सहसंबंध गुणांक का प्रयोग करते हुए आकड़ों का विश्लेषण किया जो की इस प्रकार है:

उद्देश्य 3— माध्यमिक स्तर पर कार्यरत ग्रामीण शिक्षकों की शिक्षण दक्षता तथा शिक्षक प्रभावशीलता में सम्बन्ध का अध्ययन करना।

परिकल्पना 3 — माध्यमिक स्तर पर कार्यरत ग्रामीण शिक्षकों की शिक्षण दक्षता तथा शिक्षक प्रभावशीलता में सम्बन्ध का अध्ययन में कोई सार्थक सम्बन्ध नहीं है।

सारणी 2

माध्यमिक स्तर पर कार्यरत ग्रामीण शिक्षकों की शिक्षण दक्षता तथा शिक्षक प्रभावशीलता में सम्बन्ध दर्शाती तालिका —

विवरण	संख्या	सहसंबंध गुणांक	स्वतंत्रांश dof	सार्थकता स्तर	सारणीमान	परिकलित मान	परिणाम
माध्यमिक स्तर पर कार्यरत ग्रामीण शिक्षकों की शिक्षण दक्षता	557	0.08	556	5: (0.05)	1.96	1.89	H_0 : अस्वीकृत
माध्यमिक स्तर पर कार्यरत ग्रामीण शिक्षकों की शिक्षक प्रभावशीलता	557						

परोक्त तालिका 4.3 से स्पष्ट है कि माध्यमिक स्तर पर कार्यरत ग्रामीण शिक्षकों की शिक्षण दक्षता तथा शिक्षक प्रभावशीलता के मध्य सह संबंध गुणांक 0.08 प्राप्त हुआ। वह यह सहसंबंध गुणांक सार्थक है अथवा नहीं यह जानने के लिए शोधकर्ता द्वारा ज परीक्षण का प्रयोग किया गया जिसमें ज का सारणीमान (dof 556 तथा अल्फा = 0.05) 1.96 प्राप्त हुआ हुआ तथा ज का परिकलितमान 1.89 प्राप्त हुआ जो की ज के सारणी मान से अधिक है। इसलिए शून्य परिकल्पना माध्यमिक स्तर पर कार्यरत ग्रामीण शिक्षकों की शिक्षण दक्षता तथा शिक्षण प्रभावशीलता में कोई सार्थक संबंध नहीं है निरस्त की जाती है निष्कर्ष के तौर पर यह कहा जा सकता कि माध्यमिक स्तर पर कार्यरत ग्रामीण शिक्षकों की शिक्षण दक्षता शिक्षक प्रभावशीलता के मध्य धनात्मक तथा सार्थक सहसंबंध पाया जा रहा है जो कि दोनों चरों के एक साथ बढ़ते तथा घटने को प्रदर्शित करता है प्राप्त परिणाम का संभावित कारण यह हो सकता है कि दोनों ही चर समान व्यावसायिक, मनोवैज्ञानिक एवं शैक्षिक घटकों – जैसे विषय-ज्ञान, कक्षा प्रबंधन, संचार कौशल, प्रेरणा, मूल्यांकन क्षमता, अनुभव, समुदाय से जुड़ाव तथा स्थानीय संसाधनों के प्रभावी उपयोग-से प्रभावित होते हैं। इन समान घटकों में वृद्धि होने पर शिक्षण दक्षता और शिक्षक प्रभावशीलता दोनों साथ-साथ बढ़ती हैं तथा इनमें कमी आने पर दोनों में समान रूप से कमी देखी जाती है।

उद्देश्य 4 – माध्यमिक स्तर पर कार्यरत शहरी शिक्षकों की शिक्षण दक्षता तथा शिक्षक प्रभावशीलता में सम्बन्ध का अध्ययन करना।

परिकल्पना 4 – माध्यमिक स्तर पर कार्यरत शहरी शिक्षकों की शिक्षण दक्षता तथा शिक्षक प्रभावशीलता में सम्बन्ध का अध्ययन में कोई सार्थक सम्बन्ध नहीं है।

सारणी 3

विवरण	संख्या	सहसंबंध गुणांक	स्वतंत्रांश dof	सार्थकता स्तर	सारणीमान	परिकलित मान	परिणाम
माध्यमिक स्तर पर कार्यरत शहरी शिक्षकों की शिक्षण दक्षता	614	0.11	613	5:	1.96	2.73	Ho अस्वीकृत
माध्यमिक स्तर पर कार्यरत शहरी शिक्षकों की शिक्षक प्रभावशीलता	614			(0.05)			

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि माध्यमिक स्तर पर कार्यरत शहरी शिक्षकों की शिक्षण दक्षता तथा शिक्षक प्रभावशीलता के मध्य सह संबंध गुणांक 0.11 प्राप्त हुआ। वह यह सहसंबंध गुणांक सार्थक है अथवा नहीं यह जानने के लिए शोधकर्ता द्वारा परीक्षण का प्रयोग किया गया जिसमें ज का सारणीमान (dof 613 तथा अल्फा = 0.05) 1.96 प्राप्त हुआ तथा t का परिकलितमान 2.73 प्राप्त हुआ जो की ज के सारणी मान से अधिक है। इसलिए शून्य परिकल्पना माध्यमिक स्तर पर कार्यरत शहरी शिक्षकों की शिक्षण दक्षता तथा शिक्षण प्रभावशीलता में कोई सार्थक संबंध नहीं है निरस्त की जाती है निष्कर्ष के तौर पर यह कहा जा सकता कि माध्यमिक स्तर पर कार्यरत शहरी शिक्षकों की शिक्षण दक्षता शिक्षक प्रभावशीलता के मध्य धनात्मक तथा सार्थक सहसंबंध पाया जा रहा है जो कि दोनों चरों के एक साथ बढ़ते तथा घटने को प्रदर्शित करता है प्राप्त परिणाम का संभावित कारण यह हो सकता है कि दोनों ही चर समान व्यावसायिक, शैक्षिक एवं मनोवैज्ञानिक घटकों-जैसे विषय-ज्ञान, आधुनिक शिक्षण कौशल, ज्ञ का उपयोग, कक्षा प्रबंधन, संसाधनों की उपलब्धता, विद्यार्थी-केंद्रित दृष्टिकोण, प्रेरणा, प्रशासनिक

सहयोग तथा नवाचार की प्रवृत्तिकृसे प्रभावित होते हैं। इन समान घटकों में वृद्धि होने पर शिक्षण दक्षता और शिक्षक प्रभावशीलता दोनों में समान रूप से वृद्धि होती है, जिसके परिणामस्वरूप दोनों चरों के मध्य धनात्मक एवं सार्थक सहसंबंध प्राप्त होता है।

निष्कर्ष — प्रस्तुत अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि माध्यमिक स्तर के ग्रामीण तथा शहरी शिक्षकों की शिक्षण दक्षता और शिक्षक प्रभावशीलता के बीच सकारात्मक एवं सार्थक संबंध है। शिक्षण दक्षता के घटक—विषय—ज्ञान, शिक्षण विधियों का प्रयोग, कक्षा—प्रबंधन, संप्रेषण कौशल, मूल्यांकन योग्यता, बाल—मनोविज्ञान की समझ तथा शिक्षण सामग्री का उपयोग—जितने अधिक विकसित होते हैं, शिक्षक की प्रभावशीलता भी उतनी अधिक होती है। अध्ययन में पाया गया कि शहरी शिक्षकों को तकनीकी सुविधाएँ, प्रशिक्षण और संसाधन अधिक उपलब्ध होने से उनकी दक्षता कुछ आयामों में ऊँची रही जबकि ग्रामीण शिक्षकों में समर्पण, स्थानीय संदर्भ की समझ और सामुदायिक संबंध प्रबल मिले, परंतु संसाधनों की कमी ने प्रभावशीलता को सीमित किया। दोनों समूहों में शिक्षण दक्षता का शिक्षक प्रभावशीलता पर सकारात्मक प्रभाव देखा गया। अतः कहा जा सकता है कि शिक्षक प्रभावशीलता को बढ़ाने के लिए शिक्षण दक्षता का विकास आवश्यक है। शिक्षक प्रभावशीलता केवल योग्यता नहीं, बल्कि सतत व्यावसायिक विकास की प्रक्रिया है। ग्रामीण शिक्षकों के लिए नियमित प्रशिक्षण, आईसीटी, शिक्षण सामग्री और पेशेवर विकास तथा शहरी शिक्षकों के लिए सामुदायिक जुड़ाव और व्यक्तिगत सहयोग के अवसर बढ़ाए जाने चाहिए। इस प्रकार दोनों क्षेत्रों में दक्षता—वृद्धि से प्रभावी शिक्षण सुनिश्चित होगा।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

Bandura, A. (1997). *Self-efficacy: The exercise of control*. W. H. Freeman.

Chauhan, R., & Gupta, P. (2014). A study of teaching competency among teachers at the secondary school level in Ghaziabad district. *The Signage*, 4(1), 355–359.

Gupta, S., & Sharma, R. (2021). ग्रामीण एवं शहरी माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की शिक्षक प्रभावशीलता का तुलनात्मक अध्ययन. *Review of Research Journal*, 10(5), 1–10.

Halder, U. (2018). Teacher effectiveness: A self-report study on secondary school teachers. *International Journal of Research in Social Sciences*, 8(9), 112–125.

Himabindu, P. (2012). Teacher effectiveness in relation to locale: A study of secondary school teachers. *Indian Journal of Applied Research*, 2(8), 45–48.

Jain, S. (2021). General teaching competency of secondary school teachers with respect to a few selected variables. *International Journal of Creative Research Thoughts*, 9(12), 1–8.

Kaur, N., & Paramjot. (2023). Teacher efficacy of secondary school teachers in relation to their teaching competency. *Learning Curve*, 7(3), 230–240.

Kumar, P. (2012). *Teacher efficacy scale*. National Psychological Corporation.

Kumari, M. (2025). Investigating teacher effectiveness and teaching competency of secondary school teachers of Sirsa, Haryana. *MITC Journal*, 2(1), 1–12.

Kumari, M., & Chahal, P. (2017). Teacher effectiveness of secondary school teachers in relation to selected variables. *International Journal of Advanced Research in Education & Technology*, 4(2), 45–52.

- Passi, B. K., & Lalitha, M. S. (2011). *General teaching competency scale*. National Psychological Corporation.
- Prakasham, D. (1988). Teaching competency of secondary school teachers: A comparative study. *Journal of Educational Research*, 15(1), 78–89.
- Ritu, & Singh, S. (2012). Teaching efficacy of male and female secondary school teachers: A comparative study. *Journal of Educational Studies*, 8(2), 34–42.
- Sharma, V., & Yadav, R. (2019). A study of teacher effectiveness of secondary school teachers in relation to gender, location and academic stream. *International Education and Research Journal*, 5(9), 45–52.
- Singh, A. K., & Tyagi, N. (2020). माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की शिक्षण दक्षता और शिक्षण प्रभावशीलता का अध्ययन. *Shodh Samagam*, 5(3), 67–78.
- Singh, J. (2017). माध्यमिक स्तर के शिक्षकों की शिक्षण दक्षता का अध्ययन. *International Journal of Creative Research Thoughts*, 5(4), 112–120.
- Singh, R., & Kaur, H. (2025). Teaching competency of secondary school teachers in relation to their occupational stress. *The International Journal of Indian Psychology*, 13(1), 1–12.
- Tyagi, N. (2022). माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की शिक्षण दक्षता और शिक्षण प्रभावशीलता का शिक्षक प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों के संदर्भ में अध्ययन [Unpublished doctoral dissertation]. Chaudhary Charan Singh University.
- Venkataiah, S. (2000). *Teaching competency: Concepts and practices*. Anmol Publications.
- Yadav, P., & Bose, S. (2023). ग्रामीण तथा शहरी माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण दक्षता का तुलनात्मक अध्ययन. *Shodh Jhalak*, 12(2), 89–98.